वो नमाज भी क्या अदा
जिसपे खुदा हो ना फिदा
गर खुदा जो होता फिदा
क्यू न दिखाता अपनी अदा

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

देखता बंदा जो खुदा की अदा
तो हो जाता खुदा ये फिदा
नहीं चाहता कोई और चीज कदा
लड़ाता इश्क खुदा से ही सदा

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

इश्क होता है वही सच्चा
जिसमें होता है विचार पक्का
खुश जो है अगर खुदा मेरा
तो ही खुश रहेगा ये दिल मेरा

मेरे दिल में जो विरह जले

उस रोशनी से रोशन गर खुदा हसे

तो वो आग कभी ना मिटे

भलेही उसमें हम मर मिटे

जो होती है मेरी बरबादी
गर खुदा देखता है उसमें आबादी
तो वो रहे हमेशा आबाद
भले ही हम रहे हमेशा बरबाद

जो मर मिटने को रहता है तैयार
उसी को मिलता है खुदा दिलदार
बस वो मिटना हो खुदा के प्यार में
ना इस संसार के दुश्मनी या प्यार में

ऐ खुदा तू रहेमत करे
नहीं है ऐसे करम मेरे
अब तू कर रहेमत ऐसी
करम हो काबिल रहेमत के तेरी

मिली जो खुदा मुझे तेरी रहेमत
कुछ ना बाकी रहे मेरे मत
ना फेरना कभी नजरे रहेमत
तो मैं रहू सदा मदमत्त

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

जो चाहो रखना खुदा को खुश
तो रखो उसके बंदों को खुश
सच्चे बंदोंको करके नाखुश
कर पाया कोई खुदाको ना खुश

गर पहनाना चाहो सुमनांजली
प्यार की उस मोहना को
तो देनी पड़ेगी तिलांजली
दिले संसार की कामना को

जब से हुआ तेरी नजरे इनायत
ऐ खुदा आन पडी मुझपर कयामत
इतना सुंदर अंदाज तेरा
कैसे भुला कयेगा मन मेरा

दिल में है बस मिलन की प्यास
ना दिन पता है ना रात
नैन जो मिलाये तूने
मानो किया कोई घात तूने

एक तो छोड दिया साथ मेरा
पड़ा औरों के गले में हाथ तेरा
कैसा है ये दिल मेरा
सहता है हर आधात तेरा

मैं भोली बातों में आयी

मोहन दगाबाज को समझना पायी

बातों ही बातों में न्यौधावर हुई

बातों की बात बातों ही में रही

झूठी तूने बात कही
मैंने कही तूने सच कही
तेरे झूठ के सहारे जीती रही
इंतजार तेरा करती रही

आस फिर भी मिटती नहीं

आँसू फिर भी थमते नही

पर दिल ये मानता नहीं

कि याद उन्हें आती नही

याद मन में आती रहेगी
आँसू आखोंसे निकलते रहेंगे
मन् व्याकुल होता रहेगा
उनके आने की आशा में जीते रहेंगे

जरासी नजरा नजरी

जरासी जोरा जोरी

और मेरे मन की तिजोरी

उस मोहन ने चुरायी

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

नजर से सैन निकलते गये
तलवार दिल पर चलती गयी
मरहम मिलन का मांगने गयी
वो तडपता छोड कर चले गये

उनके बेदर्दी की क्या बात कहे

दिल में जो दर्द दूबा रहे

उस पर और सित्तम करे

और दर्द में ही दिल डूबा रहे

हमने जो चाहा उनका किनारा
तो कर लिया उन्होंने किनारा
बुलाया नदी के उस किनारे
जहां वो कभी ना पधारे

दुनिया तो पागल है

पागलपन ही करती है

मोहन मोती फेकती है

संसार पत्थर पूजती है

उस झूठ की क्या बात करे
जिसमें सच का अंश ना रहे
मन जो हारा तो क्या करे
झूठ में भी सच का भास करे

मैने जो दी धन:श्याम को गाली

तो कहता इतनी क्यूं इतराती

जनम जनम की तो तू प्यासी

प्यासी होकर जाम ठुकराती?

माना वो कभी ना आयेंगे

मन को कैसे लेकिन समझायेंगे

मन में जो वो समा गये

उन्हें बाहर कैसे निकाले

नैनों से लड़ गये नैना
दिल की हो गयी पूरी देना
अब चाहे दिन हो या रैना
मन याद करे उन्हीं के बैना

मन हाथ से कैसे गया

कुछ नहीं पता चला

बस इतना ही समझ में आया

मन का हकदार अब मैं नहीं रहा

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

दुनिया चाहती है दौलत, शोहरत, इज्जत

खुदा कहता है छोड दे दुनिया की लज्जत

सबसे मांगे प्यार खुशी की भीख

खुदा से प्यार करने की क्यू न लेता सीख

श्यामसुंदर मेरा दिल ले गया
और मैं दिल को ढूंढती रही
एक मधुर मुसकान क्या देखी
कयामत तक रोती रही

समझा था प्यार को एक नशा

मगर निकली वो एक सजा

सजा भी है वो एक ऐसी

जिससे ना मिले कभी भी छुट्टी

दगाबाज पे विश्वास किया
नतीजा तुरंत सामने आया
मेरा तन मन लुट कर गया
और वादे व पे वादा करता गया

दुनिया के बड़े अकलमंद
सच में है अकल के मंद
छिलका चबाने का है उन्हें छंद
पड़ते कभी ना रस के फंद

चलाये फाँसे नयनों के सहारे
फाँसा मन को बातों के सहारे
दूरियाँ अब नही जाती सहा रे
जियो अब दर्दे दिल के सहारे

आँखे तेरी कारी कजरारी

खींचे मेरे मन को कारी

चितवनी आकर्षक वो न्यारी

जा बैठी मेरे मन में प्यारी

बजावे मुरली मधुर श्याम
भावे मन को सुंदर तान
जगावे मधुर भाव वो धुन
रहे सवार मन पर मिलन की धुन

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

कारी कारी झुल्के प्यारी

लहराती जैसे तरंग न्यारी

हवाओं को भी लगती प्यारी

इसीलिये चूमती बारी बारी

मधुर विष घोले अखियोंमें

डाले अखियाँ धीरे अखियों में

देदे रोना इन अखियों में

उठे मुसकान उन आखियों में

दर्शन को उसके तरसे ये मन

जीने ना दे चैन से थे मन है

बला कैसी चाहत ये मन

जिस मन को लगी जाने वही ये मन

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

नयन बरसे अमृत की धारा

हो उठे मनमोर अधीरा

बुलावे मोहन प्रेम नदी के तीरा

कवने रीत धरू तब तक मैं धीरा

बात मेरी मान तो दूरी श्याम से राख
जैसे शोला ना ले कोई अपने हाथ
शोला तरे भी छोडे पीछे कोई राख
ना छोडे श्याम कुछ भी तेरे पास

देखी भौंहे तेढी राधा

उठी मन मोहन भयबाधा

छोडी सब तेढ़ापन हो श्याम सीधा

सीधा पकडी चरण कमल राधा

सुंदर भौहों की सुंदर कमान बंद
नीचे सुंदर अखियाँ है बंद
पलकों की है उसपे किनार बंद
जैसे कोई कस्तुरी हो कुपी में बंद

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

आँख में काजल भाल के बिंदिया

चमके गगनबीच जजू चंदनिया

हसे होठ दिखे जब दंतुनिया

बिनु बादल चमके जनु बिजुरिया

राधा कृष्ण दोनो झूले
झुला कदंब की डार झूले
गोपी झुलावे सरकार झूले
सब के मन अति आनंद झूले

तन का है वो अतिकाला
मन का तो है और भी काला
करतूत ना कैसे हो फिर काली
फिर भी मन को कर क्यू ये भाती

कृष्ण देखे राधा की ओर
आँख ना देखे कहु और ओर
राधा ने पकड़ा मन का छोर
कृष्ण बंध गये प्यार की डोर

कृष्ण प्यार की ये मस्ती
मिलती नही इतनी सस्ती
देनी पड़ती है मोल में
पूरी की पूरी कश्ती

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

जिंदगी के उस मोड पर
गये वो दिल को तोड कर
कहा जो जायेगी जान छोड कर
कहे जा जाने दूंगा बंधन तोड कर

तन भी जीता मन भी जीता
श्याम ने तो सबकुछ जीता
जीत के उसका हुआ ये नतीजा
श्याम को भी तो मैंने जीता

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

आँखे कारी राधा की री
पहने है री नीली सारी
नीले श्याम पर तन मन वारी
वो राधा है री मेरी प्यारी

डसि गयो भोहि प्रेम भुजंग

काला श्याम श्यामल अंग

लियो भुजा में मेरो अंग

फैल गयो विष अंग प्रति अंग

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

हठी मन ये जिंदगी है बस दिन चार

पहले दिन अज्ञान दूसरे नशा सवार

तिसरे दिन परेशानी चौथे अर्थी सवार

युगलवर प्यार करू जिंदगी ले सवार

आँखो में है रसधार छलिया
बातों में मधु मंजुनाद छलिया
वृंदावन का वो छैल छलिया
छले सब के मन की छलिया

प्यार कैसा है ये कैसे कहना
जिसको भी मिला वहीं ये जाना
सुख को अपने छोड देना
और उसके सुख के लिये ही जीना

कृष्ण चाहे आवन गोपी घर

गोपी जाने ये कौन घर

करे बहाना आने ये मेरे घर

चाहे आना ये मेरे मन के घर

वो आया मेरे मन के घर

किया काबू मेरे सर्वस्व पर

बैठी माथा मैं हाथ में धर

जब वो गया किसी और के घर

संसार है नदि के इस पार रे
कृष्ण गाव है नदि उस पार रे
किये बगैर सद्‌गुरु नाव रे
करी सकैना नदि कोई पार रे

अरे इस जग में ना चाहे कोई प्यार
क्यों कि देख सके ना मनको कोई यार
जग देखे व्यवहार भलेही ना उसमें प्यार
करी प्यार क्यूना करी श्याम को तेरो यार

ऐसे जहाँ के क्यूं पीछे जाये
जहाँ हाथ में कुछ भी ना पाये
अंत में जब इस जहाँ से जाये
तन और धन सब फूक के जाये

इस संसार के क्यूं पीछे जाये
जहाँ स्वार्थ के सब पीछे जाये
उपर से कहे हम तुम्हे चाहे सोचे
अंदर ये क्या मेरे लिये जाये

कोमल अंग श्यामल घन

मानो गगन है श्यामल घन

प्रेम रस वर्षा करै प्रेम घन

डुबै ब्रजधाम रतिरस रतिरंग

डरे करे पाप जीवन भर

न छोड़े पीछा कभी ये डर

याते अब होय के निडर

चलु अब गोविंद के दर

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

रखे मन में जो खुदा का डर
तो ना रहे किसी और का डर
संसार डर ले जाय मौत के दर
अब तो खुद की हालात से डर

रखे मन में जो खुदा का डर

रही सकेना मन में और कोईडर

छोड के सब डर के डर का डर

आचले अब अपने खुदा के डर

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

रखे है मन में यदि संसार का डर
तो नही जाई पाये है खुदा के दर
माँगी भीख अबतक हरेक के दर
माँग के एक बार देख खुदा के दर

अश्कोंने कही दिल की सारी कहानी
जिंदगी तुम बिन अब कितनी विरानी
तड़पाती हमे हर पल यादें वो सुहानी
आवो प्रियतम आवो आस ये दिवानी

नही जलत जैसे कोई दीपक बिनु तेल
नही चलत तुम बिनु जीवन का ये खेल
प्यारे कैसे हो दिल तुम्हारा खेले ये खेल
जिऊ कैसे हाय बिनु दिल से दिल का मेल

नयन ये तरसे दिल ये तरसे
कब देखु प्रिय नैन अति सरसे
बदन ये तरसे निंदिया तरसे
प्रियतम प्रेम जल ना बरसे

बिनु मोहन सब रस लगे फीके नीरसे
लगी है अगन तन मन रहत है झुलसे
नैना है जलसे ओ प्यारे! आह है निकसे
आओ प्रियतम आओ बादल कोई जलसे

हाय! कब अईहै मिलन ऋतु पियारी
पीड़ा उठे है चुभे कोई काटा जिया री
मन पलपल ढूंढे नहीं कही पिया री
भुलू कैसे बुलाते थे कह के मेरी पियारी

चंचल चपल विशाल दोऊ नैन
निकसति पल पल नुकीले सैन
घायल सबके मन रहत दिन रैन
दिवाने सब छीन गये सुख चैन

प्यारी अखियाँ यारी बतिया
लायी रास राधा और सखिया
नाच नाचते बीती रतिया
मन ना चाहे छोडी रसिया

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

तेरे पथपर टिकी ये भीगी निगाहे

मिटती नहीं इक पल ये निगाहे

कर इधर इक बार तेरी निगाहे

तब पाये चैन ये तडपती निगाहे

किया वार नैनोंसे दिलवर

कैसे है से तू रे दिलवर

घायल कर के मुझको दिलवर

कहाँ खोया तू मेरे दिलवर

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

रही पुकारती ने मेरे दिलवर
ढूंढा वन वन ओ मेरे दिलवर
अब ना तरसा ओ मेरे दिलवर
लग जा गल ओ रे मेरे दिलवर

नैन बरसाती अश्रृधार रसिया

सुनन चाहती मीठे बोल रासिया

मन सोच ना सकि कुछ और रसिया

कैसे जिऊं बता अब मेरे रसिया

राधा कहे अरे यो हरजाई

पास ना अब मेरे आईं

जिस घर तूने रात बिताई

जा अब उसीके घर बसाई

राधा केस अपने खुले छुड़ाई
टेढ़ी भौहे श्याम को दिखाई
श्याम कहे अब शामत जायी
चलो गहूं गोपियों के शरणाई

राधाजी तो मान कर बैठी
श्याम ने बाते बहुत बनायी
अंत समझे ना कुछ चल सकाई
अब रोऊ पडू गोपी के चरणाई

झलकते आँखों की देखी जो झलकन
छलकते मय की नशीली वो छलकन
नशीली हो गयी आँखों की पलकन
धड़कते दिल की थम गयी धड़कन

ऊर में है श्याम मिलन की ही चाह
दिल से निकसती पल पल ये आह
गैरों को गले लगाती छलिये की बाह
छायी उदासी निहारू उसीकी ही राह

रसीले आखों की चमक, नशीली
सरस मुखचंद्र की अदा नशीली
काली भौहोकी कमान नशीली
होठों पे है मृदु मुसकान नशीली

झुल्फों की ये लहरान नशीली

गालों की ये कोमलता नशीली

होठों की ये लालीमा नशीली

बातों की है मधुरता नशीली

हाथों की सुकुमारता नशीली
तलुओं की नजाकत नशीली
कमर की कमनीयता नशीली
नशा ही नशा है बदन में नशीली

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

ये तो नशे की नशा है नशीली
मय की नशा अब नलगे नशीली
उतरती जाये नशा मय की नशीली
चढती जाये नशा ये तेरी नशीली

आँखो से लूटाये तुने

मोती असली प्यार के

पहने उसकी माला गले में

फिरु मदमस्त हाल में

तेरे आँखों की गहराई का
करता हूँ विचार गहराई से
डूब गया जो इस गहराई में
निकला न किसी चतुराई से

तेरे प्यार की ये आशिके उलझन

सोचू करू कोई कोशिशे सुलझन

कर जितनी भी कोशिशे सुलझन

बढती उतनी ही ये आशिके उलझन

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

रोती क्यूं जो दिल श्याम ने लिया
दिल को जूने ही सजाया संवारा
शुद्ध साफ दिल जो श्यामने देखा
तो श्यामने उसका किया सफाया

खुदा खुदा जो सब कहते है
दिल संसार से भर लेते है
उसको आने को भी कहते है
लेकिन जगह खाली नही रखते है

बुद्धिमान जो सब कहते है

बुद्धि इतनी भी नहीं रखते है

जिसको साथ नहीं ले जा सकते है

उसी के पीछे लगे रहते है

संतों को अपना नहीं मानते .
भरोसा गैरों का मुर्ख है करते
भगवान जो चिंतामणी उज्वल
उससे चिंतायुक्त संसार मांगते

दिल एक घर दो कमरे बीच में दरवाजा

एक में रहते है हम एक रहता हमेशा बंद

पहला संसार दूसरा भगवान का ठिकाना

प्यार के लिए खोलना दरवाजा बीच का

दिल का घर, घर में दो कमरे, बीच दरवाजा
अंधेरे में है हम, दूसरे में भगवान का उजाला
आनंद प्रेमसुख चाहो तो बस दरवाजा खोलना
कुंजी सदा सर्वत्र स्मरणयुक्त राधे राधे बोलना

प्यार की तूने ऐ खुदा जो लुटायी दौलत
फकीर की तो खुल गयी पूरी किस्मत
कौन अब पूछता दुनिया की दौलत और इज्जत
सामने असली सोने के गोबर की क्या किमत

बहते नयन ना रुके नीर

हाय कैसे में बांधू धीर

दिल में उठे अति पीर

बेपीर अति मुरलीवारो वीर

पिया गये है परदेस पियारे
मन भयाकुल पास नहीं पिया रे
न दे प्यार की तू इतनी सजा रे
कि निकल जाये तन से जिया रे

पिया गये है परदेस पियारे
मन भयाकुल पास नहीं पिया रे
तू सखी कुछ दे मन को धीरज रे
कैसे सहूं प्यारे अब तू ही बता रे

भूल जाये जो अपने सुख को
याद रखे वो प्रेमी केवल तुझको
चाहे रखना सुखी हमेशा तुझको
कर सके सेवा अर्पित ए खुदा तुझको

जा रही थी इक गली में मैं री
आगे पीछे था नहीं कोई री
आयो अचानक श्याम वहा री
कहा अरी देख तो जरा मेरी ओरी

जानती थी उसकी बाते सारी

कहता हरेक को तू मेरी प्यारी

देख कर मैंने दूसरी ओरी

कहा उसे भली तेरे से दूरी

कहे श्याम अरी ओ गोरी
मैंने जो की प्यार की बोली
क्यों इतनी तू इतराती री
जनम जनम का मैं तेरो साथी

सुनाया मैंने मैं नहीं भोली
खेलना किसी और से ये खेली
अगर तूने जो राह मेरी रोकी
देना पड़ेगा तुझे जुर्माना भारी

तो उसने पकड कर मेरी सारी

कहा तू तो अति सुंदर नारी

मेरी माति पर तूही छायी

तू तो है री मेरी प्यारी

छुडाना चाहा जो मैंने सारी
उसने बाह गले में डारी
आँखो से मेरी अखिया मिलायी
खींच लिया मेरे मन को वा री

अब ना कोई दूसरी सुझती
उसकी ही याद है मन में रहती
छाबि उसकी वो मुसकाती
एक पल को भी नहीं भुलाती

करु मैं तेरी दासत्ता

है यही एक तमन्ना

बाकी सब तमन्ना

भुलू यही तमन्ना

प्यार किया नहीं जाता

करते हैना जाता हैता बोके

फिर भी और वही होता है

जहाँ से सुख मिलना तय होता है

कैसी तूने ये नजर लगायी

हरदम मैं रहती हूँ सतायीश्री

नहीं कुछ बस अब चल सकाती

ये बला नहीं जा सके छुड़ायी

लगायी मुझे ये कैसी व्याधी
अंदर ही अंदर आते ही दुखाती
ना कुछ भी दवा असर दिखाती
बैरन बनि ये रहती सताती

तेरे नैनों ने डाला उर शूला

है ये सब वेदना कर मूला

चाहूँ कि ये निकले समूला

चुभन बढ़ती की जाये शूला

किया प्यार तुझे ओ रंगीला
लुटाया तन मन तुझपर ओ रसीला
हाय रे हुआ ये कैसा धोखा सारा
मिला मेरे दिल को पुरस्कार दर्दीला

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

बुलाया बसचे श्याम ने यमुना के तीरा
पिलाया मुझे भर के प्यार का प्याला
वो नजर वो बाते को स्पर्श यार का
भर गया तन मन में प्यार यार का

खिलाया श्याम ने जहर प्यार का
कर गया असर रोम रोम पे मेरा
अब ऐसे तड़पू, मैं उसके बिना
जैसे प्राणपंछी उड़ जाये मेरा

हाय रे कन्हैया

कैसा से दोस्ताना

फिरू मैं मारी मारी

और तू रहे मस्ताना

एक दिन कुछ लगी बीमारी

नी जाने कुछ क्या हुआरी

सोच रही थी करू मैं क्या री

सोचा सखी से बताऊँ बात सारी

अचानक दरवाजे पे आया कोई री
कहा उसने मैं हूँ वैदवा भारी
यूं हटा देता हूं बीमारी सारी
जरा सी जो खा ले दवाई मेरी

जैसे खोला दरवज्जा री

घुस आया अंदर कन्हैया री

डरावनीसी मैं अति हुई री

देखे कोई तो होगा क्या री

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

कहा उसने नहीं कोई री
यहा से ना कोई देख सके री
आजा तू जरा पास में मेरी
खोना ना देना मौका प्यारी री

मैं तो गयी बहुत शरमायी री
ना नैन उससे मिला सकी री
पकड़ी उसने कलाई मेरी री
लगाया सीने से कहके प्यारी री

जब से देखा था उसको री

लग गयी थी ये बीमारी री

जान के उसने मनकी मेरी री

चला आया वो मेरे घर में री

खिलायी बुटी मुझे प्यार की री
हुआ असर मुझ पर भारी
लगा जैसे हट गयी बीमारी री
हाय! जाना ये तो बढ़ी बीमारी

चाहू अब मिलना बस उसको री
चाहू सुनना गुन अब उसीके री
लगे अति सुहावना सोच सोच री
वो हो गया मेरा और मैं उसकी री

गुरु कृपालु की बात कुछ और मन
बसाये है जिनको स्याम अपने मन
लगे साफ करने में पापियों के मन
जब हो पावन बसावे राधाकृष्ण उस मन

बस चाहे ये छोटी सी बात एक तुमसे मन
छोड सब जगतमोने ये अपना उनका मन
हो सेवा उनकी कर अर्पण से तन मन धन
आज्ञापालन ही है सेवा खो से कत मन में भन

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

कृपासागर कृपालु कृपा का ही भरा है घन
बरस रहा कृपाजल तू पी सके तो पी ले मन
छोड़ अहंकार बनु दीन बात मान अब तो मन
तोही उपजे मधुर प्रेमफल तेंरे भी मन में मन

करु प्रार्थना कृपालु दीन बना दे मेरा मन
नहीं पता दीनता रहा अहंकारी सदा से मन
बस एक आस रहे तेरे ही भरोसे मेरा थे मन
कर दे मधुर निष्काम प्रेमरस परिप्लुत ये मन

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

मन कहे करू राधा की सेवा भवन में

रखू खुश राधाको रहू खुश उसी के सुख में

देऊ बुहारी चापू चरन राधा के महलन में

बनू दासी रहू राधा के साथ हरदम वृंदावन में

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

श्यामा श्याम खडे दोनों गले में डारे बाँहे

झुकाये मस्तक एक दूसरे के लगे दोनो अति प्यारे

दोनों की कारी कारी लट उरझी एक दूसरे में

करती दोनो प्रयास छुड़ावे लट एक दूसरे से

छूट गयी लट तो अटके गलहार एक दूसरों में

छूट गये गलहार तो अटक गये मुकुट एक दूससे में

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

ऐसेही उलझे करधनी, कंकन, पायल एक दूसरे में
बलिहार युगलवर अटकी छवि एक दूसरे में
असली बात सुनु सखी अटके नयन एक दूसरे में
मन ही जब अटका तब छूटे नयन कैसे एक दूसरे से
सुंदर झाँकी निहारती कहती सखिया एक दूसरे से
अटकी नजर हमारी भी देख अटके युगलवर एक दूसरे में

सरस रंगीला नैन रसीला
रंग रस का रसमय नीला
पीतांबर फहरे सौरस पीला
श्याम कुछ रस दे मुझे भी पिला

सरस रंगीली नैन रसीली

रंग रसका सुरस सुवर्णी

फहरे सौरस नीली सारी

करू प्यार मोही मेरी प्यारी

कृष्ण श्याम है राधा गोरी
जैसे मेघ बीच चपला न्यारी
चपल श्याम की चंचलता जाई
आँखे स्थिर जैसे अचल हो जाई

नजर श्याम की नहीं ये नजर
खुलती है श्याम की जब ये नजर
नजर से लगे जिससे भी ये नजर
न उतरे अनंत काल फिर ये नजर

श्याम की जो लगे नजर

जला दे दोनों जहाँ ये नश्वर

भर दे नजरे जल से नजर

चाहे देखा बस श्याम ये नजर

राधा की का कहनो रति माधुरी
घायल करे सबके मन को प्यारी
श्याम भुले सब सुधबुध सारी
चाहे कैसे ही मिलना राधा प्यारी

भोरापन क्या कहनो राधा

श्याम ना भूले इक पल राधा

सखी गण सब सेवती राधा

सब के तनमन की स्वामिनी राधा

अति सुंदर है गोरी राधा

लाल बिंदी है भाल विराजा

सारी नीली है प्यारी राधा

खींचे मन कोई टोना डारा

मधुर सरस मुसुकनि राधा

मन को बरबस खींचे राधा

प्यारी किनार दंतुनिया राधा

न्यौछावर सब कुछ उस पर राधा

सुंदर आँखे भृकुटी न्यारी

नासिका कान्ह की प्यारी

घुंगराली लाट कारी कारी

चुमे गाल की लाली प्यारी

नंदरानी घर चलि है ब्रजबाला

ललची है आँख देखन को लाला

कैसा है ये लाला सोचे बाला

क्युं लगे इतना मन को प्यारा

भोर भयी यशोदा जगावे कान्हा

और चाहे जरा सोना कान्हा

पकरि मैया बिठाने कान्हा

भारी आँखे छबि सुंदर कान्हा

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

करे जब तुतरायी बतिया
लगे बडाही प्यारा कान्हा
सुंदर भोला चेहरा न्यारा
पूरे ब्रज पर है जादू डारा

राधा रमणा गोपी रमाणा

नंद घर गोकुल बन रमणा

गैया गोप सखा मन रमणा

बसावो ब्रज मोहि वृंदावन रमणा

लाली लाल खड़े है दोनो

रूप स्पर्धा करे है दोनो

श्रृंगार अति मनभावन दोनो

कौन सरस ना कही सके दोनो

बतियन की मयकदा लुभानी

अखियन की अदा लुभानी धनि

तिरछी छवि हाय लुभानी

कृष्ण माधुरी सदा लुभानी

कोई पागल धन और सत्ता
कोई पागल स्त्री संताना
कोई पागल प्रसिद्धी पैसा
सयाना पागल भगवान संता

कोई देखे नट नटी लीला
कोई देखे खेल खिलाड़ी लीला
कोई देखे राजकारण लीला
सयाना देखे श्रीकृष्ण लीला.

वासना है ये राक्षसी ऐसी
करावे भक्षण विषयविष ऐसी
भरे उदरना कभी भी ऐसी
अंत खाये यजमान को भी ऐसी

सुख की ये आशा कैसी
पता नहीं ये पूरी होय कैसी
दौडावे ये दिन राती ऐसी
फिर भी ना ये पूरी ऐसी

झूठी प्रतिष्ठा व्यवहार झूठा

झूठी नीव पर जग है झूठा

जताये औरन को प्यार झूठा

चाहे सुख अपनाही झूठा

राधा राधा एक नाम राधा

जपे कृष्ण जपे गोपिका राधा

जपे पापी जब राधा राधा

धुले पापमल राधा राधा

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

लगे मुर्ख को कुटुंब प्यारा

लगे मुर्ख को समाज प्यारा

यम को लगे मुर्ख ही प्यारा

भक्त पर यम का ने चले उपाया

लगे जन प्यारे जब सुख है दीन्हा
देखे दूसरी ओर जब दुख है दीन्हा
खार प्यार में सब जीवन दीन्हा
नहीं किया कभी प्यार नाथ दीना.

वो एक मूर्ख जग माहि
जो कटावे समय नाना उपायी
छोडे नाव दरिया तूफानी
करे ना भक्ति सहज सुहानी

वो एक मुर्ख जग माहि
भरोसा जो पापियों का मानि
अंती जब नरक में जाई
देखे सब साथी वही है भाई

वो एक मुर्ख जग माहि
लुटावे जो पैसा ऐषोआरामी
नही करे दान पैसा संतन दारी
जनमि है बाद में बाने भिखारी.

दुर्जन जाई करे मनोरंजन
खेल विषय सुख मदिरा भंजन
सज्जन जाई करे मनोरंजन
कृष्ण सुख शुद्ध प्रेम मनरंजन

महफ़िल विषय रहे दुर्जना
कामिनी पैसा सत्ता वासना
महफ़िल विलय रहे सज्जना
प्रेम दान भगवान सेवा भावना

संत पहचान है बहुतही जरूरी
कौन है असली कौन है नकली
संसार भाव भक्ति नासे नकली
भक्ति निष्काम सुखद दे असली

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

प्यारी प्रेम पीयुष भरी मेरी राधा

खींचे रसीले नैना कान्ह मेरी राधा

मेहंदी हाथ पांव सजी मेरी राधा

मोहक छबि उन्मादिनी मेरी राधा

फुल से भी कोमल हृदय जिनका

नभ से विशाल ज्ञान-सागर जिनका

पापियों के उद्धार का बिरद जिनका

जय हो श्री कृपालुजी महाराजजी का

राधा की ये रति माधुरी
घायल करे सभी को प्यारी
श्याम भुले सुध-बुध सारी
कैसे हूं चाहे मिलना प्यारी

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

प्यारी है राधा प्यारे है कृष्ण
सब मिली अब मनाओ जश्न
सताये जब तुम्हे चाहे जो प्रश्न
हल है करो प्रीत राधा और कृष्ण

जय राम जय राम जपू तेरा नाम

कर दो राम तुम मेरा एक काम

प्रीत तुम से करते है कैसे निष्काम

आ कर मुझे वो बता जाओ राम

परम सुंदर राधा और कृष्ण दोनों
गावत जादू भरे मधुर स्वर में दोनों
करत नृत्य कमनीय रम्यक दोनों
ना हारे कोऊ एक ही तो है दोनों

रास्ता सुख का है कहा ?

बाहर तो सब जड है सदा

वस्तु भले ही बाहरी हो मना

सुख तो हमेशा मन में ही मिला

रास्ता सुख का मन से ही निकला

बाहर जगत सुख है ही नही मना

बस तू ये जान ले मना

मन से भक्ति कर सुख मिलेगा मना

राधे तेरी महिमा कौन जाने जग में
धरे कृष्ण तेरे पग अपने कर कमलों में
भुले फिर सबकुछ मगन तेरे आनंद में
कहे हम दास राधा के वृंदावन कुंज में

देवियाँ है जिसकी अंश मात्र
महाभाव निष्काम प्रेम रूप मात्र
कृष्ण की स्वामिनी जो राधा मात्र
भजु राधे राधे राधे दिवस रात्र

नहीं भगवान मन में

नही वाको खेद मन में

पापियों की बात मानि के

गये पाप घर नरक में

कृपा करो प्रभु रामा

देदो सुबुद्धी दयाला

लगे तेरा नाम प्यारा

लगे तेरा भक्त प्यारा

जपू नाम तेरा

लखू रूप तेरा

तपू विरह तेरा

तू कन्हैया एक मेरा

करु सेवा राधा

रखू सुखी राधा

रहू सुखी सुख राधा

आराधना राधा ही राधा

कृष्ण की जो स्वामिनी

वो राधा जो है मेरी

करू सदा मनमानी

भय किसका उर माही?

देखू कृष्ण लीला

देखु लीला राधा

राधाकृष्ण युगल लीला

मन रहे सदा रंगीला

रहू सहारे राधा

ना जानू और कोई बाधा

राधा के प्रेमधामा सुनु

आलापे कृष्ण प्रेमरागा

नैन प्रेम रस बाणा

मुरली प्रेम स्वर बाणा

चाल और बान मधुर बाणा

कस न शिकार पामर बामा

राधा का आँचल पकड के

रह राधा के पीछे-पीछे

कृष्ण ललचे रहे पीछे,

देखे हम आगे वो पीछे

करू बाते बड़ी बडी

जानू चित्त में है खोटी

राधा मेरी कैवारी

निकाले खोटी छोटी छोटी

नवनीत नवल चोरा

गोपिकाओं के चितचोरा

मानू शिरोमणी तव चोरा

चोरी हो जब पाप मोरा

गावे मधु चराने बन गैया

साथ में है बलराम भैया

गोपाल गोप रमैया

रमहुँ मेरे चित्त कन्हैया

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

सुकुमारी कोमल राधा
जानाति तू हाल मेरा
अवगुण खाण मन मेरा
तू ही है इक आधार मेरा

कृष्ण बोले स्वर मंजु
गावे लगे स्वर आत मंजु
मुरधि धुनि मधुर मंजु
साथ पायल बाजे मंजु-मंजु

सिर मुकुट मोर पंख को

गल माल गुंज मणिन को

कान कुंडल है फूलन को

बने है बनमाली बन को

राज नंद के घर यशोदा मैया

सिखावे चलना कन्हैया

पकरे अंगुली कनुवा चलैया

चले सहारे मैया जग चलैया

दुर्दैव की करुण कहानी

न लगे प्यारी नाम वाणी

पोसे अहंकार अति अहंकारी

अपनोंही करुण अंत ना जानी

तो एक मुर्ख जग माही

संत ऊर प्यार ना जानी

सोचि संत व्यवहार मन माही

कहे इससे तो हम भले भाई

तो तो एक मुर्ख जग माही

करे प्यार जग जाई

करे पाप जाई जाई

कहे भगवान ही सब कराई

तो इक मुर्ख जग माही
नाना तिकडम जो भिडाई
ठगाने लोग पामर भाई
सोचे कैसी मेरी चतुराई

कैसी है ये चतुराई

सोच सोच मात भरमाई

अति सोच तरकीब निकलाई

कैसे कटावे अपनो पाव भाई

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

सद्गुरु सखा कृपालु तेरा
करी है रक्षण पल पल तेरा
न छोडि है इक पल ध्यान तेरा
बस हो शरण एक बारा

सद्गुरु सखा कृपालु तोरा

करी है मदद हरदम तोरा

जाने, पूछि है कवनहाल तोरा

कही है ये तो पागल छोरा

सद्गुरु सखा कृपालु मोर

निकरी है पाप मन मोर

करी है प्रेमरस सरबोर

देई है सेवा मधुर रसबोर

आँखे मोहन की सुंदर प्यारी
बतिया मंजुल है ति प्यारी
बजत मुरली धुन मधुर प्यारी
दिल में है बस प्यारी ही प्यारी

क्या कह आकर्षण राधा

दृष्टी ना हेटे जब देखे राधा

राधाकृष्ण आकर्षण बाधा

सब कहे हाय! कृष्ण हाय राधा !

मधुर मधुर राधा बोले
सुनि श्याम मन आनंद डोले
राधा अधर लाली मन घोले
श्याम भूले सब हौले हौले

मन में क्रोध अति भारी

वापर काम बहुतही विकारी

मोह की तो है भरमारी

क्या चिंता? जो राधा सबसे है भारी

चलती है ये दुनिया
जैसे भीड बकरी गैया
जिस दिशा चानिह एक भैमा
सब पीछे न जाने कहा चलैया

आस एक यह मन मेरी

बसाऊ रुपमाधुरी मन में तेरी

करु रुदन करूण बारी-बारी

जाऊँ मोहन पर वारी वारी

खाना जो प्रसाद समझ कर खाओ
तो परमपिता परमेश्वर की कृपा पाओ
खाना जो बढ़िया स्वाद देखकर खाओ
तो सुअर विष्ठा स्वाद अति प्रिय जानो

जो चाहो एक अद्भुत अनुभव
राधा कृष्ण प्रेम का अनुभव
तो छोड़ो शरीर सुख अनुभव
करो कृष्ण प्रेम साधना अनुभव

जो मिलना हो प्यारे कृष्ण से
प्यारी छबि रुप ध्यावो मन से
स्थान या अपवित्र चाहे हो जैसे
कहे वेद स्मरण मिलायेगा उससे

प्यार करना जाने हर कोई
प्यार से सुख संबंध नही कोई
प्यार हो जो गलत व्यक्ति से कोई
तो दुःख यातना पाये हर कोई

प्यार कोई खेल खेल नही भाई
आपकी ही जिंदगी का सवाल भाई
सोच के चुनो प्रेमास्पद भाई
सही आदमी लाये खुशहाली भाई

सब से बढ़िया श्रीकृष्ण है भाई

प्यार कृष्ण से ही करो भाई

अंनत जीवन ज्ञान सुख भाई

मिले जब प्यार कृष्ण से होई

श्रीकृष्ण ही सब के माँ बाप और भैय्या
सुत सखा स्वामी प्रियतम भी वही कन्हैया
करे रक्षा मान ले जब उन्ही को अपना भैय्या
सब जीवों के कृष्ण एक ही एक रक्षक सैंया

आँखों से तुम करते हो वार
तलवार अब क्या है काम?
अदाओं ने दुश्मन जीते बने यार
संग्राम का अब क्या है काम?

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

रूह से रूह का नकली है नाता
मौत बाद रूह कहाँ कौन जानता
रूह का खुदा का असली है नाता
जिंदगी या मौत खुदा साथ निभाता

देख कर अपना स्मारक मंदिर सुंदर
होते होंगे खुश कितने हमारे गुरुवर
हमारी खुशी है खुशी हो जो रहवर
चलो मनगढ़ सब पावन अवसर पर

कृष्ण की जो स्वामिनी

वो राधा है रखवार मेरी

करू मैं सदा मनभायी

डर न किसका उरमाही

राधे तुम्हारे जनम दिन पर
रहे तेरा ही नाम नित जुबान पर
रहे तेरा रुप नयन में हर जगह पर
दूँ उपहार अश्रू तुझे नित पल पल

याद मन में आती रहेगी
आँसु आँख से बहते रहेंगे
दिल ये उदास होता रहेगा
फासले ये कब तक रहेंगे?

कृष्ण देखे राधा की ओर
चितचोरी हुई घर चितचोर
राधा ने पकडा मन का छोर
कृष्ण बंध गये प्यार की डोर

कोमल अंग श्यामल धन

गगन विराजत श्यामल घन

करे प्रेम वर्षा श्यामल घन

डुबे वृंदावन रतिरस रतिरंग

आया फिर होली का दिन आया
प्रेमी प्रह्लाद को भगवान ने बचाया
भक्ति की महिमा सब सामने लाया
हमरे मन में विरहाग क्यूं न जलाया?

होली आयी मनभावन मौसम लायी
पिया का मधुर आल्हादक प्यार लायी
लाल पीला नीला रंगों कि बौछार लायी
होली आयी मन में आनंद लहरी लायी

प्यारो प्यारो कन्हैया कितनो है भोरो
प्यार के गोपिन पर बिक गयो प्यारो
पानी छाछ पियत बलि जात पियारो
योगी ज्ञानी नही पायो प्रेमरस बिचारो

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

तेरे संग पिया तन मन की नजदीकियाँ
रेशम स्पर्श, दिलकश बातों की मस्तीयाँ
महकती सासें, मधुरस बरसाती अखियाँ
रतिरस पियत ना अघाऊँ ओ मेरे रसिया

भोरापन अति क्या कहनो राधा
श्याम ना भुलि है एक पल राधा
मधुर मुसकनि क्या कहनो राधा
तन मन प्राण सब न्यौछावर राधा

संत को त्यागी कहा किसीने
संसार के सुख छोडे है आपने
सुनो असली सुख त्यागा तुमने
मैं भोगी अनंत सुख तन मन में

ना दिन पता है ना पता रात
दिल में है मिलन की प्यास
किया तूने मुझसे बडा घात
जख्मी दिल की दी सौगात

वैलंटाईन डे करावे पाप कर्मा
गति जिसकी यातना नरक धामा
गोपी प्रेम डे करावे भक्ति कर्मा
गति जिसकी दिव्य गोलोक धामा

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

अगर पहेनना सुमनांजली चाहो
असुवन प्यार की मनमोहना को
तो मित्र कलत्र संसार कामना को
दे दो तिलांजली जहर जानी को

झूठी कृष्ण तूने बात कही
परसों तेरी बरसों ना आयी
तेरे झूठ के सहारे जीती रही
राह तेरी हरपल देखती रही

नही कोई दरियादिल जैसे भगवान
प्रेमी सुख का रखते कितना ध्यान
अपनी प्रतिज्ञा नही रखा जरा मान
प्रेमी प्रतिज्ञा की रखी है कितनी शान

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

आती रहेगी उनकी यादें मन में
आँसु भरे रहेंगे नित नयनों में
पल पल तडपन रहेगी ह्रदय में
जीयेंगे हरपल आशा ए मिलन में

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

प्यारी प्रेम पियुष भरी मेरी राधा

खींचे कान्ह रसीले नैना मेरी राधा

मेहंदी पाँव हाथ सजी है मेरी राधा

मोहक छबि उन्मादिनी मेरी राधा

वो नमाज भी क्या अदा
जिसपे खुदा हो ना फिदा
क्या वो आसू क्या वो रोना
जिसमें भीगा ना आया कान्हा

तेरी बाहो में गुजरे जो लम्हे
सावन की गिरती सुनहरी बुंदे
आँसूओ से नम वो भीगी यादे
कहा खोये मेरे वो सपने सुनहरे

इस जिंदगी में सबको अजमाया
एक ने छोडा तो दूसरे को दिल दिया
जिंदगी का सफ़र कटता गया
हृदय में एक दोस्त हमें परखता रहा
उस कृष्ण से प्यार हमने कभी नही किया

प्रेम तो कहते है दिल से होता है
पर इशारे दिमाग दिल चलता है
(लेकिन दिमाग दिल की लगाम है)
दिमाग है स्वामी तो दिल दास है
यारो प्यार दिलोदिमाग से होता है

प्यारी राधा प्यारे कृष्ण
मनाओ सब मिली जश्न
चाहे जो सताये तुम्हे प्रश्न
हल है करो प्रीत राधाकृष्ण

राम जय राम जपू तेरा नाम
कर दो तुम एक मेरा काम
प्रीत होती है कैसी निष्काम
आकर मुझे बता जाओ राम

मोहब्बत हो खुदा से ऐसी
प्राण से है जिंदगी की जैसी
पल पल रुलाये याद ऐसी
मौत तरसे जिंदगी को जैसी

दान सत्पात्र आज कर अभी कर
कल करेगा ऐसा कभी मत कर
मन फिर बदलेगा तेरा दगा कर
जन्मे दरिद्री पिटे सिर अपने कर

सुनहरी शाम सुरीली तान
मोहिनी राधा मोहक श्याम
मोहती सब ब्रज की बाम
हो ऐसी सदा मंगल शाम

सुनो संकीर्तन वेद शास्त्र सार

साधना करो रूपध्यान प्यार

हो भवसागर आसानी से पार

जब हो श्रीकृपालु नाव सवार

आत्मा पति परमात्मा आनंद रूप
गोपी करे करवा चौथ पूजा दीप धूप
चाहा कृष्ण को अपना पति स्वरूप
कामना पूर्ति महारास पूर्ण रस रूप

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

यादों की दिल में चूभन रहेगी
आँसू की नमी आँखोंमें रहेगी
चेहरे पर उदासी छायी रहेगी
दूरियाँ कब तक बनी रहेगी?

भैयादूज आज कौन हमारे प्यारे भैया
संसारी भैया तो सब है स्वार्थ के भैया
मरने के पहले बाद एक ही साथी भैया
करू तिलक मेरा तो है कन्हैया ही भैया

आँखों में है जादू प्यारो है छलिया

बातों में है मधुरस रसधार छलिया

ब्रजधाम वृंदावन के है छैल छलिया

प्रेमरत ब्रजवासीन छलत है छलिया

राधा प्यारी लायी रसधार

रंगीलि रतिरस की बहार

कान्ह भये जापर निछावर

करो कृपा प्यारी हम सबपर

राधा प्यारी लायी रसधार

रंगीलि रतिरस की बहार

कान्ह राधा एकटक निहार

रसीलि छबिपर सब बलिहार

संसार की करुणामयी माता

सब जीवों की चैतन्य दाता

कुपूतों की हितकारी माता

जय ममतामयी जय श्री राधा

कृष्ण से मन से ऐसा करो निष्काम प्यार
हार-जीत मान-अपमान सब लगे समान
धन-दौलत युवती सत्ता सब लगे बेकार
सब जीव जगत में दिखे कृष्ण अपनो यार

कोई कहे पागल कोई कहे सयाना
सुखा कहे या कहे आशिक मस्ताना
लायक या नालायक कहे ये जमाना
राधा मेरी सखी कृष्ण से मेरा याराना

कहाँ ढंढू राधा सखी मेरी प्यारी

बिनु प्यारी सारा जग लगे खाली

राधे दर्शन प्यास बुझा दो हमारी

तुम बिनु कृष्ण कैसे रहे बता री

गगन विराजत जलधर श्यामल घन

वृंदावन रहत प्रेमरस निधी श्याम घन

भिजत ब्रज वर्षा प्रीति जल प्रेम घन

डूबत रतिरस रतिरंग सब वृंदावन जन

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

प्यार कैसा होता है कैसे कहना
पल पल कान्ह को खुश रखना
आँसू आँहे बेचैनी और तडपना
विरह की बेहोशी में मस्त रहना

सद्गुरु ही है पिता सखा स्वामि माता
सद्गुरु ही जानो परम हितैषी अपना
सद्गुरु ही करते हमारा कल्याण साचा
सद्गुरु कृपालु से ही जोडो सब नाता

तेरी नजरों का प्यारा नजारा

देखे गया गुजर एक जमाना

तेरी बातों का मधुर तराना

सुना दे एक बार फिर दुबारा

बूंद बूंद बरसे बादल बिजली सावन
भीगी भीगी उदासी निहारु पंथ साजन
जल जलाय नही कोई चैन तन मन
बीते लम्हों में यूं ही बीते पल पल ये जीवन

इंपॉसिबल लगते रहे जो भगवान

इंपॉसिबिल कभी वो थे ही नही

पॉसिबिल मन ने उनको माना ही नही

पॉसिबल बन इसलिए वो आये ही नही

श्री महाराजजी है विद्यमान वैसे ही अभी भी
जैसे थे करते थे कृपा हम सब पर पहले भी
कर लो स्वीकार हृदय से इस बात को सभी
पाओ उनकी कृपा राधाकृष्ण भक्ति से सभी

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

जानता है प्यार करना हर कोइ
सुख तो दे मगर प्रेमास्पद जो होइ
गलत जगह प्यार कर खुद बरबाद होइ
कृष्ण से प्यार अनंत जीवन सुख लाइ

हम खो देते है मिला अवसर

सुनहरा और दुर्लभ अवसर

क्योंकि नही जानते अक्सर

कि मिला है हमे कोई अवसर

बच्चा नही जाने मोती का क्या है मोल
तजै मोती लै के टाफी हसे दिल खोल
संसारी न सुहावै सुखसागर हरि बिनुमोल
मरै संसार में न जानै इंद्रिय सुख की पोल

स्वभाव तेरा श्रीसीता माता

श्रीराम के लिए जीना मरना

मूरत है तू सब संतन गावा

अनन्य नित प्रेम निष्कामा

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

देखे भगवान बुद्ध एक लाश
तोड दिये सब वैभवादि पाश
सोचे हो कैसे सब दुःख नाश
छोडे जो इंद्रिय सुख की प्यास

तेरे आँखों की गहराई का
करता हूँ विचार गहराई से
डुब गया जो इस गहराई में
निकला न किसी चतुराई से

प्यारी की अखियाँ प्यारी

प्यारी की बतिया प्यारी

प्यारी छबि अति प्यारी

प्यारोहुँ रटे प्यारी प्यारी

तस्वीर मेरे दिल की निकालिए

कौन कौन है वहा देख लीजिए

औरों को दिल से भगा दीजिए

फिर आप मेरे दिल में रह लीजिए

आया सावन सुहावना मन भावन
छायी हरियाली छाये काले बादल
ठंडी हवाएँ छुती सुलगता तन मन
छेडत मुरली कान्ह हित रस मिलन

नही जग में कोई तुम जैसा स्मार्ट
चुरा लेते हो देखते ही सभी के हार्ट
नैनों तो के है बड़े ही नुकिले डार्ट
घायल हो जाते है मन के सब पार्ट

तुम्हारा प्यार सब पर छाया
तपते दिल को सुकून लाया
जैसे दे धूप में पेड सुख छाया
तप्त जीवन तेरी ममता छाया

आयो रे मतवारो श्याम आयो रे

प्यार भरी फुलवारी बरसायो रे

गोपिन गोप सब के मन भायो रे

नाचत बेसुध सब बधाई गायो रे

रंगीन शाम मुरलीवारो वीर
मलय पर्वत सुगंधित समीर
मधुर गात चलत यमुना नीर
हृदय विंधी गयो प्रेमरस तीर

दिशाएँ है मस्त इस संधिकाल में
मन है खोया तेरी रंगीन यादों में
गहरी उदासी छायी है मेरे दिल पे
कब आओगे दो संदेशा परदेश से

ना कोई आपके अनुकूल है
ना कोई आपके प्रतिकूल है
औरों के माध्यम से वही मिलता है
जो आपके कर्म नसीब में लिखते है

दूसरों सताने का दंड मिलता है

क्योंकि मन की सोच खराब है

प्यार खार द्वेष आदि मन में है

इन्ही भावना से बाहरी कर्म है

इसलिए कर्म का कर्ता मन ही है

मन ही को भगवान में लगाना है

तभी ये मायिक मन शुद्ध होता है

फिर ये मन दिव्य बन सकता है

छोड दीजिए मन का निचला स्तर

चुनिए निष्काम प्रेम का उच्च स्तर

जाना है हमे अब सबसे ऊपरी स्तर

जहा है प्यार ही प्यार रहते युगलवर

आप लगाये बैठे है आशा सुख की जिनसे
वे करते है आशा उनको मिलेगा सुख आपसे
मतलब इसका कि नही है सुख पास किसी के
मिलता है सुख सभी बस अपनी कल्पना से

जैसे बदलता है किसी का आकलन मन से
वैसे ही कम जादा मिलता सुख उस व्यक्ती से
जानोगे ये मन का खेल पूरी बुद्धी लगाने से
फिर करोगे प्यार उस सुखसागर प्यारे कृष्ण से

माना सबको मिलता सब नसीब से
फिर क्या मतलब है कर्म करने से
क्यूं मिलता है दंड गलत कर्म से?
पाप पुण्य परिभाषा किस काम से?

पाप पुण्य होता है मन की मनीषा से
मनीषा सही रखना है हमारे मन से
ना दो तो भी होगा दु:खी कर्म यदि वैसे
पापी पाये दंड अपनी खराब मनीषा से

एक है छोटीसी पर बड़े ही काम की बात
समझो उसे अभी या समझो हजारों जन्म बाद
कृष्ण ही हमारा मातु पितु सखा सुत पति नाथ
जब करो स्वार्थ पूर्ति तभी दे संसारी नाते साथ

राधे तुम्हारे जनम दिवस पर

वारौ अनंत जीवन तुम पर

रहे तेरी हस्ती छाये मन पर

रहो खुश तुम हर दिन हर पल

तेरी प्यारी अदाओं पर
तन मन प्राण निछावर
डूबा दो हमे भी गुरुवर
दिव्य प्रेमरस सरोवर

राधे तेरे चरणों का रस कैसा
रखत सिर पिये मोहन ऐसा
हम पामर कब जाने वो कैसा
कृपा करी जब तुम जनावे ऐसा

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

सावन ऋतु अति मनभावन

नभ भरे काले श्यामल घन

श्याम सलोना भाया सबके मन

एक बरसे जल एक प्रेम धन

बादल जल कृष्ण दे प्रेम जल

कृष्ण बागों में है, कृष्ण फुलों में है
कृष्ण जगत के कण कण में है
कृष्ण सभी के ऊरपुर में भी है
बस हमें उसका एहसास नही है

चाँद आधा अष्टमी का
रोशन है रस प्यार का
कृष्ण प्यारा राधा का
राधा प्यारी कृष्ण की

दिन है लाली की छटी का

लाली रूप महाभाव प्रेम का

सरस सुरस मादन रस का

बनावे लाल दास लाली का

दिन है लाला के जन्म का

लाल है रूप ब्रह्म रस का

आनंद कंद लाल नंद का

जय हो श्याम चंद्र ब्रज का

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

करू प्रार्थना कृपालु तोही दीन बना दे मेरा मन
नही पता दीनता रहा अहंकारी अनादि मेरा मन
बस एक आस रहे तुम्हारे ही भरोसे मेरा मन
कर दो निष्काम माधुर्य प्रेम परिप्लुत मेरा मन

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

राधे तेरी महिमा कौन जाने जग में
तेरे कर प्यार से लै के अपने कर में
माने कृष्ण धन्य अपने को मन में
कहे हम राधा के दास सदा कुंजन में

बरहौं है आज प्यारी लाली की
रतिरस ब्रज बरसाने वारी की
ह्लादिनी शक्ति मुरली वारे की
पुरवो मम आस निष्काम प्रेम की

बरहौं है आज लाली प्यारी की

प्रेमरस सार ब्रज ठकुरानी की

राधे पुकारे मुरली मुरलीवारे की

जय हो प्रेमधनी श्री राधा रानी की

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

श्याम सलोना मुरली धुन वारा
सुंदर अति प्यारा ब्रज का तारा
कारे नैनों से ससीले सैन मारा
जोडे गोपियों से मन की तारा

राधा प्यारी की मैं हूँ फॅन
नाम से राधा होता रस ऑन
राधा लाती है अंधेरे में डॉन
बनी रहूँ सदा राधा का पॉन

लाली पहनी है लाल सारी

आसमां में फैल गयी लाली

लाल लाल हुई यमुना सारी

ब्रजवासी रंगे रंग लाल लाली

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

पत्तों में फूलों में रंगों में बहारों में
पेडों में बन में नदियों में पहाडों में
सुंदरता है जो रचनाकार तेंरे में
उतरी है तेरी सदाबहार रचना मे

मायिक धन संपत्ती सत्ता इकठ्ठा कर करेगा क्या?
इनसे इर्षा क्रोध टेन्शन आदि से छुट्टी मिलती क्या?
मरने पर इन सबका मूल्य तेरे लिए झीरो नही क्या?
दो दिन का हिरो बन मुर्ख, युगो दु:ख सहना है क्या? .
धनतेरस के दिन सोच असली धन होता है क्या?

आयी दीपावलि दीप जले घर घर
अंधेरा दु:खों का क्यूं है ऊर पर
दांव लगा ले परम सुखदायी कृष्ण पर
वरना जलेगा एक दिन स्मशान चिता पर

कहाँ ढुंढू सखी मेरी राधा प्यारी
बिनु प्यारी सारा जग लगे खाली
राधे दर्शन प्यास बुझा दो हमारी
तुम बिनु कृष्ण कैसे जिये बता री

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

नैय्या में छेद, छेद से पानी नाव डुबने की बारी
फिर भी ना छोडे नाव तो वो मूर्खताही हमारी
डूबती नैय्या शरीर छुटे एक दिन सब नर नारी
ना छोडे शरीरसुख प्यास वो तो बडा मूर्ख भारी

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

सुरज ने ओढ़ लिया है काले बादलों का परदा

सोचे कौन है ये मुझसे जादा प्रकाशमान तारा

ललचाये देखु जरा हटाके धीरे से मुखसे परदा

देखे तो चमकता सुंदर राधा कृष्ण मुख चंद्रमा

सबसे बडा स्थान ब्रह्म कृष्ण का

उससे बड़ा स्थान दिव्य प्यार का

है वो कृष्ण दीवाना प्यार का

बना गुलाम प्यार मूर्ति राधा का

वो नमाज भी क्या अदा
जिस पर खुदा ना हो फिदा
प्रियतम इच्छा हो अलविदा
ऐसा प्यार तो है कूडाकबाडा

आयी सुखद आल्हादक पूनम शरद की
लायी जनम दिन स्मृति प्यारे गुरुवर की
लो प्रतिज्ञा उनकी बतायी राह चलने की
हरदम करो कोशिश उन्हें सुख देने की

माना नव-वर्ष आया पुराना गया
लेकिन तू क्यू इतना खुश हो गया?
मरण एक साल नजदीक आ गया
मौत से बचने के लिए तुने कुछ किया ?

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

जिंदगी हर क्षण आपके लिए बढ़ता सुख लाए

मेरा प्रेम आपके लिए सदा पहले से अधिक रहे

जिस में आप सुखी हो वही मेरा अपना सुख रहे

आपके यादों की खुशबु मेंरे मन सदा महकती रहे

जनम दिन की ढेर सारी शुभकामनाएं

परम सुंदर राधा कृष्ण दोनो
गावत जादूभरे स्वर में दोनो
नृत्य करत कमनीय रम्यक दोनो
हारो न कोउ एक ही तो है दोनो

शरीर सुख छोडिए

आत्म सुख अपनाइए

नश्वर संसार छोडिए

शाश्वत श्रीकृष्ण अपनाइए

किस प्यारी का घर लुटना है प्यारे
लुट कर मालामाल बनाना है प्यारे
अब सो जा लेकर ये सपने प्यारे
हुआ अंधेरा आयी है रजनी प्यारे

करो कृष्ण से अधिक प्यार

तो वो होता है अधिक प्यारा

जो वो होता है अधिक प्यारा

तो होता है उससे अधिक प्यार

करो राधाकृष्ण से अधिक प्यार
तो वे हो जाते है अधिक प्यारे
जो वे हो जाते है अधिक प्यारे
तो होता है उनसे अधिक प्यार

अपने शरीर पर ऐ मूर्ख
क्यों इतना इतराता है?
डूबती हुई कश्ती पर भी
अपना कोई घर बनाता है?

बहती अखंडित जैसे नदिया की धार
हो वैसे अविरत उनसे निशदिन प्यार
प्यारो लगे अविराम प्रियतम नंदकुमार
प्यार बरसे नित प्रेममूर्ति वृषभानुदुलार

भोरापन अति क्या कहनो राधा
श्याम न भुलिहै इक पल राधा
प्यारी मुसकती मधुर प्यारी राधा
तन मन प्राण सब निछावर राधा

दुःखमय संसार इस पार रे
सुखी कृष्ण गांव उस पार रे
बिना किये सद्गुरु नाव रे
करी सके ना ये सागर पार रे

राधा है जलाशय जल प्यार का

बाल लहरे जैसे प्रपात प्यार का

आँखे रसीली झरना प्यार का

बाते मधुर बरसे बादल प्यार का

तेरी खुशी के लिए

जान भी हाजिर है

इज्जत दौलत शोहरत

तो गिनते ही नही है

चाहत मेरी अगर गुनाह है
तो गुनेहगार मेरे सनम तू है
तेरी प्यारी अदाओं ने ही तो
मेरी इस चाहत को सिंचा है

बंद आँख में है तेरी मूरत
खुली आँखों में तेरी सूरत
बैठ गये हो तुम मेरी सिरत
भूल न सकू तुझे किसी सूरत

दुनिया के जन्म मरण भवंडर में
क्यूं दु:खी हो कर गोते लगाता है?
जहाँ अनंत प्रेम सुख के है भँवरे
क्यूं वो दिव्य सुख नही चाहता है?

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

हृदय में स्थित सुखधाम कृष्ण छोडकर

क्यूं पागल बनकर बाहर सुख ढूंढता है?

घर में छप्पन व्यंजन भोजन हो कर भी

क्या कोई बाहर रास्ते पर भीख माँगता है?

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

जायेगा रूप जायेगी संपत्ति दाया माया
चलेगा पता अब तो बस कर्म ही साथी मेरा
उस दिन सोचेगा इतना कमा कर क्या मिला?
काश भक्ति कर्म कुछ दान धर्म किया होता

हम क्या करते है इससे जरूरी है
हम सही सोच विचार से करते है
भगवान मन का सोचना देखते है
बाहरी क्रिया नोट ही नही करते है

अनोखी अल्हादक शारद की रात हो
प्यारे तेरी मदभरी प्यारी प्यारी साथ हो
रस रास की सुरस रसभरी बरसात हो
मेरा जीवन युगल माधुरी की सौगात हो

सुख दुःख मन का खेल है जो ये जानता है
वो अपने मन को ठीक करने में लग जाता है
अपने मन को भगवान की ओर ले जाता है
और एक दिन अनंत सुख प्राप्त करता है

सुख दुःख बाहरी दुनिया में है जो ऐसे समझता है
वो बाहरी जगत को ठीक करने में लग जाता है
अपने मर्ज की जब कोई गलत दवा करता है
तो ठीक होने के बजाय वो दुःखी रह जाता है

राखी आयी लायी बहन प्यार
फुहार आयी सावन की लायी बहार
जब नाते जीव के तो है कृष्ण से यार
बांधे राखी उनको पायें उन्हीसे प्यार

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

उदय हुआ है सूरज प्रकाश मन भाया है
अंधकार डरावना रात का भाग गया है
उदय हो मन प्रेम प्रकाश यही प्रार्थना है
माया मोह तम नाश हो यही आशा है

जो रखोगे मुझे अपने उरपुर
आओगे मेरे दिव्य धाम सुखपुर
जो रखोगे मुझे अपने से दूर
रहोगे संसार कष्ट मरण दुःखपुर

कहते है एक अपराध बारबार करता हूं

आदमी हूं आदमी से प्यार करता हू

मानो तो कहो भगवान से प्यार करता हूं

एक दिन भगवान से मिलना चाहता हूं

भगवान सब देख रहे है

हर वक्त हर पल हर जगह

मानोगे तो बचोगे

वरना बहुत पिटोगे

तेरी इच्छा से कोई मोल भाव नही
तेरी ईच्छा में कोई किंतु-परंतु नही
तेरी ईच्छा से अलग हमारी ईच्छा नही
प्रेम करने वाले हम प्रेमी है बनिया नही

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

वो नमाज भी क्या अदा जिसपे खुदा हो ना फिदा

खुदा बनाया इन्सान कि करे बंदगी बन्दा सदा

फरेब खुन खराबा धोखा ये तो है नापाक सजदा

जोजक जा कर करोगे बदनाम धर्म मुहम्मद का

शांत किनारा शाम सुहानी रंग अनोखे
धीरे से पानी पर उठती हल्की लहरे
मंद हवा बिखरती दिल पर बीती यादे
मन में उदासी आँख में आंसू के झरने

लाल पीले नीले होली के रंग
पिया के रसीले प्यार के संग
तन सरोबर होली के रंगीले रंग
मन सरोबर रंगीन पिया के रंग

जिंदगी में उन लोगों को मत ढूंढो
जो आपके मुआफिक होते है
उन लोगों की तलाश जरुर करो
जो आपको सही रास्ता बताते है

निःशब्द हसीन वादियों मे

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

दूर दूर तक नीले गगन में
झूम झूम झूमते बादलों में
गिरते पानी की प्यारी फुहार में

बहकी लहराती हवाओं में
रंगीन महकते सुंदर फूलों में
रूप वही छाया है इन सब में
छबि सुहानी हरपल जो मन में

सॉँवरे ने डाले होली के अनोखे रंग
ब्रज-जन लाल-लाल ब्रजराज संग
रंग बौछार लायी सब मन मधुर तरंग
राधा ने बरसाये जब प्रीत के रंग

नही छुपा हूं मैं कही आकाश में
क्यू ढूंढते हो मुझे तीर्थ स्थल में
ना ही रहता मैं कर्म-धर्म कीच में
ढूंढो प्यार से मिलूंगा तुम्हारे मन में

जाओगे जब दूर ओ मेरे सनम
कैसे बितायेंगे जीवन बिन तेरे हम
विरान होगा बहार का ये मौसम
कैसे सहेंगे मौत सी वेदना वो हम

जो तेरी प्रीत का उदय हो मन में
मधुर सुरीली झनकार रहे सदा मन में
दुःख निराशा अंधेरा निकल जाये मन से
सुख आशा का उजाला भर जाये मन में

कोमल कोमल सुकुमार फूल
रंग बिरंगे सुंदर रंगीले फूल
सुगंधी सुवासिक महकते फूल
दिल पर छाये तेरा ही तसब्बूर

जो हमे सदा सुखी रहना है

तो मन मशीन ठीक करना है

वरना दुःख यातना मरण भोगना है

अंहकारी जिद कुछ नही बनना है

दुनिया चाहती है अच्छी सुरत
भगवान चाहता है अच्छी सिरत
जीवन हुआ बरबाद पिछे अच्छी सुरत
भक्ति से अब तो बना अच्छी सिरत

मोहब्बत हो खुदा से ऐसी

जिंदगी को है प्राण से जैसी

पल पल सताये याद कैसी

मौत तरसे जिंदगी को जैसी

सोते जागते याद तेरी यार

जैसे बहती गंगा की धार

मनभृंगी पिये मधु मधुर सार

महके दिल यार फुलवारी प्यार

तेरी ये मदमस्त अदा

प्यार की ये मधुशाला

मन पीता रहता सदा

असीम सरस आनंद तेरा

काले घने घुंघरारे तेरे बाल
उसमें सुगंधी फुलों का साज
मंजु मंजुल सुंदर मुरली तान
छाया मन पर वो नशीला नाद

हाय दोस्त कहने वालों नही कोई कमी
दोस्ती निभाने वालों की है बहुत ही कमी
दिलों की इस दुनिया में नही कोई कमी
दिलवालों की लेकिन यहा है बहुत ही कमी

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

तेरी अदा मस्त मधु टपकाती
चंचल आंखे मदिरा बरसाती
बाते दिलकश नशीली मस्तानी
तन-मन दे कर मैं बनी दिवानी

देखु सपना तेरा रात सोते

देखु राह तेरी जगते जगते

रखु याद तुझे सांझ सवेरे

रहू अलमस्त मैं प्यार में तेरे

लगाऊं कृष्ण तुझसे प्रीत
तुम ही हो मेरे मन के मीत
सीख कर प्रेम लगन रीत
गाऊं सदा तेरे ही गीत

दर्द की दरिया में दर्दीली लहरें है
चांद भी एक दर्दीली फरियाद है
पुराने दिनों की सुहानी यादे है
मन में यादों का दर्दीला तूफान है

जन्म दिन पर तेरे प्यारी
क्या दूं गिफ्ट तुझे न्यारी
कदमों पर तो तेरे प्यारी
सारी दुनिया कर दूं वारी

देखे राधाकृष्ण चांद सोचे मन ही मन में
खूबसूरती शीतलता थी मेरी उपमा से
लेकिन देखता हूं राधा कृष्ण निराले ये
तुलना नही कोई इनकी शीतल सुंदरता से

कृपालु धाम सज गया है

भक्ति धाम प्यारा प्यारा है

गुरु धाम में रस बरस रहा है

आपका इंतजार हो रहा हैं

भक्ति मंदिर अति सुंदर बनाये श्री कृपालु गुरुवर
गुरु धाम भक्ति मंदिर उनकी यादें लाये दिल पर
गुरु मंदिर भक्ति मंदिर दर्शन करो सब मिलकर
हो जन्म सफल यदि रटो राधे-राधे जीवन भर

ऐसे जहाँ के क्यूं पीछे जाये
जहा न कुछ हाथ में रह पाये
अंत जब जग छोड़ कर जाये
तन-मन-धन सब फूँक कर जाये

कहते है प्रेम बस दिल से होता है
नही यारों प्रेम दिलों दिमाग से होता है
दिल की डोर दिमाग के हाथ होती है
धोखा ना चाहो तो दिमाग चलाना होता है

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

खाओ पिओ मौज करो

एक दिन फिर मर जाओ

इस चक्कर से बाहर आओ

तत्वज्ञान लो मृत्यु को मात दो .

यदि मिला है हमे जन्म मनुष्य का
तो है वो अवसर तत्वज्ञान ग्रहण का
यदि मिला है हमे संग असली संत का
तो है वो अवसर भगवान से मिलने का

करते रक्षा भगवान हर पल प्रेमी की
लो सीख प्रह्लाद से निष्काम प्रेम की
रखो नित्य याद कृपालु भगवान की
जय हो जय हो श्री नरसिंह भगवान की

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

फोटो मेरे दिल की खींच लीजिए
कौन रहता है वहा देख लीजिए
औरों को दिल से भगा दीजिए
फिर आप मेरे दिल में रह लीजिए

शेर शायरी : चंद्रशेखर चिपळूणकर

सायं आसमां में यादें बीती

रंगों मे भरी गहरी उदासी

मेरे साथी एक तेरी ही कमी

दिल पर मायूस तनहाई लायी